

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान ।  
 निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥  
 नव केवल लब्धि प्रकटाओ,  
 फिर योगों को नष्ट कराओ ।  
 अविनाशी सिद्ध पद को पाओ,  
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

(६)

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है ।  
 सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥टेक॥  
 खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं ।  
 दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है ।  
 चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥  
 भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे ।  
 आतम सुबोध कर पापों से डर रहे ॥  
 पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥  
 जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है ।  
 छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है ॥  
 देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

(७)

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले ।  
 तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले ।  
 मन की तू घुंडी को खोल, खोल-खोल-खोल ।  
 तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥  
 क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी,  
 घट ही में है तेरे, घट-घट का वासी ।  
 अन्तर का कोना टटोल, टोल-टोल-टोल ॥१॥